10/01/2022

Q- श्रवण बाधिता को परिभाषित करें एवं उसके वर्गीकरण करें।

Ans- श्रवणबाधित बालक वे बालक हैं जिनकी सुनने की क्षमता कम होती है या फिर नष्ट हो जाती है। उस बाधिता के कारण उन बच्चों में अनेकों प्रकार की समस्या का सामना करना पड़ता है। उन बच्चों को दूसरों की भाषा समझने और सुनने में कठिनाई होती है। ऐसा कहा है कि श्रवण बाधिता से सभी व्यक्ति असमर्थ होते हैं। कुछ बालक गंभीर रूप से तो कुछ आंशिक रूप से बाधित होते हैं। इस प्रकार श्रवणबाधित बालक या तो कम सुनते हैं या फिर सुन ही नहीं पाते हैं।

आंशिक रूप से श्रवणबाधित बालक बोली गई ध्वनि को ऊँचा सुनते हैं। उसके लिए किसी श्रवण यंत्र की आवश्यकता नहीं होती है। ऐसे बालकों को सामान्य कक्षा में पढ़ने में अधिक समस्या नहीं आती है। ऐसे कई छात्र हैं जो आंशिक बाधित हैं और समान कक्षा में अध्ययन कर रहे हैं। कुछ गंभीर रूप से श्रवण बाधित बालक होते हैं, जिन्हें सुनाई नहीं देता है उसके लिए सशक्त यंत्र की आवश्यकता पड़ती है इस प्रकार के बच्चों को ठीक से समझाने के लिए अध्यापकों को शिक्षण प्रविधियों एवं रणनीतियों में परिवर्तन की आवश्यकता होती है और उनको सामान्य कक्षा में मुश्किल होती है। उन्हें समझाते समय वस्तुओं को दिखा-दिखा कर समझा सकते हैं। कुछ बालक जन्म के बाद चोट के कारण या किसी दुर्घटना के कारण इस दोष से ग्रस्त हो जाते हैं। जन्म से दोष वाले बालक की चिकित्सा कठिन होती है जबकि...

जन्म के बाद दोष वाले बालक या दुर्घटना वाली चोट आदि से हुई बाधिता से विशेषज्ञ चिकित्सा से ठीक हो सकता है।

## Classification of hearing impairment :-

(i) Mild hearing child (कम श्रवण बाधिता)
(ii) Moderate hearing child (मंद श्रवण बाधिता)
(iii) Severally hearing child (गंभीर रूप से श्रवण बाधित बालक)
(iv) Profundly hearing child. (पूर्ण श्रवण बाधित बालक)

13/01/2022

### (i) Mild hearing impaired :-

कम श्रवण बाधित सामान्यतः बातचीत का स्तर 65 डेसीबल तक होता है। जो कम श्रवण बाधित बालक है उनको 35-51 डेसीबल की ध्वनि को सुनने में दिक्कत होती है। ये बालक सामान्य आवाज को सुन सकते हैं पर धीमी आवाज नहीं सुन पाते हैं।

### (ii) Moderate hearing child :-

इनके लिए ऊँची आवाज में बोलना पड़ता है। यह 55-69 डेसीबल की ध्वनि को नहीं सुन पाते हैं। इनको सामान्य वार्तालाप सुनने में कठिनाई आती है। इस प्रकार के बच्चे सुनाई देनेवाले यंत्रों का उपयोग करके सुन सकते हैं।

### (iii) Severally hearing impaired Child :-

इन बालकों की बाधिता 70-89 डेसीबल तक की होती है। ये काफी ऊँचा बोलने पर भी ठीक से सुन नहीं पाते हैं।

पटाखा / बारात का शोर - 110 डे.
DJ का शोर - 106-120 डेसीबल
55-65 — सामान्य

13|01|2022

(iv) पूर्ण श्रवण बाधित बालक :-

ऐसे बालकों का श्रवण स्तर 90 डेसीबल से पार होता है। ये बहुत ऊँचा बोलने पर कुछ ही शब्द सुन पाते हैं।

Symptoms of hearing impaired Child :-

(i) ये धीमे से बोलते हैं।
(ii) शब्दों को बोलने में कठिनाई होती है।
(iii) बिना जानकारी के बड़बड़ाते हैं।
(iv) एकाग्रता नही रहती है।
(v) ये कार्यों के प्रति सजग रहते हैं परंतु ध्वनियों पर ध्यान नही देते हैं।
(vi) बार बार पुनरावृत्ति के लिए बोलते हैं।
(vii) समान ध्वनियों में भ्रम होता है।
(viii) बिना जानकारी के ही बीच में बोलते हैं।
(ix) गर्दन झुकाकर या उठाकर सुनने का प्रयास करते है
(x) हावभाव पर ध्यान देते हैं।

17|01|2022

विशेषता (Speciality)

(*) श्रवण बाधित बालकों की पहचान करना कठिन कार्य है क्योंकि ये सामान्य व्यवहार ही करते हैं। ऐसे बालकों की विशेषता इस प्रकार है-

भाषा या वाणी संबंधी समस्या :-

(i) उच्चारण दोष अधिक पाया जाता है।
(ii) भाषा का
(iii) उन्हें भाषा सीखने और बोलने में समस्या होती है।
(iv) होठों की गतिविधि पर ध्यान देते हैं।

17/01/2022

## बौद्धिक योग्यता संबंधी विशेषताएँ :-

(i) इन बच्चों का मानसिक विकास सामान्य बालकों की भाँति होता है।
(ii) इनके बौद्धिक कार्य सामान्य बच्चों के तरह ही है
(iii) इनमें मानसिक मंदता नही होती है।
(iv) अन्य विधियों के प्रयोग से भी शीघ्र समझ लेते है।

## समायोजन संबंधी विशेषता :-

(i) इनका व्यक्तित्व (सामान्य से) भिन्न होता है।
(ii) सम्प्रेषण की समस्या होती है।
(iii) समाज से पृथक रहते है।
(iv) उनको ही समूह में रहना पसंद करते है।

## Causes of hearing impaired (श्रवणबाधिता के कारण)

बच्चों में श्रवणबाधिता की कई वजह/कारण हो सकते है। श्रवणबाधिता जन्म के पूर्व या जन्म के पश्चात हो सकती है। जिसका पता जाँच के द्वारा भी किया जा सकता है। कुछ कारण इस प्रकार है -

### (a) वंशानुगत कारण :-

श्रवणबाधिता के कुछ कारण वंशानुगत भी होते है। जब माता-पिता श्रवणबाधित हो तो कुछ प्रतिशत बालक श्रवणबाधित हो सकते है। जन्मजात बाधित वंशानुगत कारण से होते है।

### (b) समय से पूर्व प्रसव :-

यह कारण भी हो सकता है। क्योंकि समय से पूर्व बालक के सभी अंगों का विकास ठीक से नही हो पाता है। जिससे यह दोष पाया

जाता है।

असंतुलित भोजन :-

गर्भावस्था में यदि माता संतुलित भोजन नहीं करती है। तथा बच्चे पर ध्यान न दे तो भी यह दोष हो सकता है।

उच्च ध्वनि :-

कई बार उच्च ध्वनि के कारण भी श्रवण दोष होता है

आयु (Age) :-

वृद्धावस्था में शरीर अत्यंत कमजोर हो जाता है। इसका प्रभाव श्रेन्द्रियों पर पड़ता है। श्रवणेन्द्रियाँ भी उससे प्रभावित होती हैं।

श्रवणबाधित बालकों की शिक्षा हेतु कुछ उपाय :-

श्रवणबाधित बालकों की शिक्षा की सबसे बड़ी समस्या सम्प्रेषण की होती है। वो कक्षा में बतायी गयी बातों को ठीक से सुन नहीं पाते हैं। सुनते भी हैं तो आधा-अधूरा। इसके निवारण के कुछ उपाय निम्नलिखित हैं -

lip reading (ओष्ठ पठन) :-

इसके अन्तर्गत ऐसे बालकों के ओठ के मिलने खुलने के हिलने व उनकी गति के आधार पर शब्दों को पढ़ना सीखाया जाता है। ओष्ठ पठन सिखाना कुछ सीमा तक सफल है लेकिन सभी शब्दों एवं वर्णों को इससे नहीं सिखाया जाता है।

Symbol language (संकेत भाषा)

इसमें पढ़ने के साथ-साथ संकेतों का प्रयोग भी किया जाता है। सांकेत भाषा के लिए वक्ता का स्पष्ट उच्चारण कर उससे संबंधित संकेत या फिर आपसी में प्रयोग किया जाता है।

20/01/2022

## स्पर्श विधि :-

इसमें स्पर्श द्वारा किसी भी बात को समझाया जाता है।

## गतिविधि (movement) :-

इसमें बच्चों को विभिन्न प्रकार की गतिविधि करवा- कर सीखाया जाता है।

## Helping equipment (सहायक उपकरण) :-

कई श्रवण सहायक उपकरणों के माध्यम से सिखाया जाता है जो बालक थोड़ा कम सुनते है, उनके लिए सहायक उपकरण का प्रयोग होता है।

## श्रवणबाधित बालकों की शिक्षा में शिक्षक की भूमिका

किसी भी प्रकार के बालक हो सामान्य या विशिष्ट सभी की शिक्षा के लिए शिक्षक की भूमिका बड़ी महत्वपूर्ण होती है। क्योंकि बालक स्कूल समय में सबसे अधिक समय शिक्षक के सम्पर्क में ही व्यतीत करता है। अध्यापक अपने ज्ञान, अनुभव, शिक्षण विधि, प्रविधि एवं व्यक्तिगत सम्पर्क के माध्यम से बच्चों को ज्ञान एवं अनुभव प्रदान करता है।

(i) सर्वप्रथम कक्षा में श्रवणबाधित बालकों को पहचाने।
(ii) उनकी सूचना माता-पिता को दे ताकि वो उन बच्चों की देखरेख करें एवं समुचित चिकित्सा- या जाँच कराएं।
(iii) उन बच्चों को कक्षा में आगे की सीट पर बैठाए। जिससे बच्चे सुन सकें या गंभीर रूप से बाधित है वे ओष्ठ पठन का सहारा लेकर सीख सके है।
(iv) शिक्षक को पढ़ाते समय ऊँची आवाज तथा श्यामपट्ट का प्रयोग करना चाहिए जिससे उन बच्चों को सीखाने में आसानी हो।

(v) यदि संभव हो तो इसके शिक्षण के लिए दृश्य सामग्री की अधिक व्यवस्था व प्रयोग किया जाना चाहिए।

(vi) अध्यापक को पाठ या शब्दों की पुनरावृत्ति करनी होगी।

(vii) इन बच्चों के लिए शरीर संचालन संकेत विधि द्वारा समझाया जाता है।

(viii) इन बच्चों को समय-समय पर निरीक्षण किया जाना चाहिए ताकि गलतियों को दूर किया जा सके।

(ix) इन बच्चों की रुचि व योग्यता को पहचान कर कार्य दिया जाए।

## अधिगम असमर्थ बालक :-

इनसे सही रूप से दिमाग काम नहीं करता है। न किसी के द्वारा बोले गए शब्द को सही से समझ नहीं पाते हैं। ऐसा मस्तिष्क में चोट लगने के वजह से होता है। बच्चों को इनसे कुछ भी समझने में कठिनाई होती है और वह अधिगम नहीं कर पाता है तथा बातों को भी नहीं समझ पाता है। ऐसे बालकों को अधिगम असमर्थ बालक कहते हैं।

## अधिगम असमर्थ बालकों की विशेषताएँ :-

### ध्यान केन्द्रित करने में कमी :-

यदि बच्चा आप जो पढ़ा रहे हैं उसमें एकाग्र नहीं हो पा रहे हैं, ध्यान नहीं दे पा रहा है, मतलब वह अधिगम नहीं कर पा रहा है। आपकी बातों को समझने में असमर्थ है।

### (ii) संवेगात्मक योग्यता :-

इन बच्चों में संवेग होता है। और आज्ञाकारी होते हैं, शांत स्वभाव के होते हैं, चुप रहते हैं,

जो शिक्षक समझा रहा है उस बातों को नहीं समझते है। अगर कक्षा में ऐसा बच्चा शांत रहता है, आज्ञाकारी है, लेकिन वह भी अधिगम असमर्थ हो सकता है।

(iii) **अतिक्रियाएँ** :- वर्गकक्षा में बच्चों को जो समझा है, वह उन बातों पर ध्यान नहीं देता है। कुछ ऐसी क्रियाएँ कर रहा है जो उस topic से related नहीं है। वह भी बच्चे अधिगम असमर्थ हो सकते है।

(iv) **स्मृति और चिंतन में कमी** :-

बार-बार किसी topic को पढ़ाने पर समझ में नहीं आ पा रहा है। इसका मतलब उसकी बुद्धि-लब्धि कम है वह अपने Memory में उस चीज को नहीं रख पा रहा है। वह अमूर्त चीजों को नहीं समझ पा रहे है। देखने के बाद ही अधिगम कर पाते है बार-बार अभ्यास करने के बाद में भी वह Memory में नहीं रख पा रहा है, चिन्तन नहीं कर पा रहा है, तो वह अधिगम असमर्थ बालक है।

(v) **शारीरिक अंगो के संचालन में कमी**

अधिगम असमर्थ बच्चों में शारीरिक या मानसिक दोष पाया जाता है। आंखों को बंद रखते है, बिल्कुल मौन रहते है अपनी दोस्तों से भी बात करना पसंद नहीं करते है ऐसे बच्चों भी अधिगम असमर्थ हो सकते है।

(vi) **विशेष अधिगम असमर्थता** :-

विशेष अधिगम असमर्थता में ऐसे बालक जो अधिगम नहीं कर पा रहे है नहीं सीख पा रहे है गणितीय संख्याओं में अन्तर नहीं कर पाते है। जैसे :- 36, 63, 14, 41 जैसी संख्याओं में अन्तर नहीं कर पा रहे है। कई बच्चे लिख नहीं पाते, Project तैयार नहीं कर पाते

27/01/2022

## * अधिगम असमर्थता वाले बालकों की पहचान

[ बालकों पहचान कैसे करना ]

भाषा सीखने में कठिनाई होती है। बार-बार समझाने पर भी नहीं समझते हैं। उच्चारण का कर-करके बताने पर भी नहीं सीखते हैं और अपने भावों को व्यक्त नहीं कर पाते हैं। Class में कोई प्रश्न के पूछे जाने पर उत्तर नहीं दे पाता है।

सामान्य बालक से बेहतर होता है लेकिन आवश्यकताएँ अलग-अलग होती हैं। मानाकि कोई बच्चा शारीरिक रूप से विकलांग है। उसमें हीन भावना आ जाती है। अगर उसको उचित वातावरण दिया जाए उचित सामग्री दी जाए, शिक्षण विधियों का प्रयोग किया किया जाय तो बच्चा अच्छा अधिगम करेगा। क्योंकि सामान्य बालकों से अलग होती है और इनकी आवश्यकताएँ भी अलग-अलग होती हैं।

अधिक संवेदनशील होते हैं या अतिक्रियाएँ करने लगते हैं। कई बार बहुत गुस्सा हो जाते हैं, तो कई बार अज्ञाकारी बन जाते हैं। जो अधिक संवेदनशील होते हैं, ऐसे बालक का अधिगम असमर्थता के नाम से जाना जाता है।

---

PWD = (1995)
(Person with disability) Act 1995, के अनुसार असमर्थ बालकों के लिए शिक्षा तथा नौकरी की व्यवस्था की गई है तथा सामाजिक सुरक्षा करती है।
e.g:- मानसिक मंदता, दृष्टि हीनता, चलना, फिरना इत्यादि।

Q. What do you understand by multiple disabilities? Discuss in detail.

बहुबाधिता से आप क्या समझते हैं? विस्तार से चर्चा

उत्तर- बहुबाधिता का अर्थ होता है कि जब कोई बालक में एक से अधिक बाधिता हो, जिसमें सभी बाधिता सम्मिलित होते हैं, उन बालकों के व्यक्तिगत और शैक्षिक आवश्यकताएँ अन्य सामान्य बालकों तथा दूसरे प्रकार के बाधित बालकों तथा दूसरे प्रकार के बाधित बालकों की आवश्यकता की अपेक्षा भिन्न होती है।

एक अंग की बाधिता के कारण दूसरे अंग की बाधिता हो जाती है। बहुबाधित बालकों को भी विशिष्ट बालकों की श्रेणी में ही रखा जाता है।

बहुबाधिता को परिभाषित करने के लिए विद्वानों ने इस प्रकार अपने विचार व्यक्त किये हैं -

<u>साचवाहिल महोदय के अनुसार :-</u>

"बहुबाधित बालक में दो या दो से अधिक असमर्थताएँ होती हैं जिन्हें उनकी देखभाल शिक्षा और भावी जीवन योजना के लिए ध्यान में रखना है।"

<u>किर्क महोदय के अनुसार :-</u>

"बहुबाधित बालक मानसिक या शारीरिक तथा सामाजिक गुणों में सामान्य बालकों से भिन्न होते हैं। उनकी भिन्नताएँ कुछ उस सीमा तक होती हैं कि सेवाओं में परिवर्तन की आवश्यकता होती है। ऐसे बालक के लिए कुछ अतिरिक्त अनुदेशन भी चाहिए। ऐसी दिशा में उनका सामान्य बालकों की अपेक्षा अधिक विकास हो सकता है।

National trust 1999 के अनुसार :-

"यदि किसी व्यक्ति को एक विकलांगता के अलावा हो या उससे अधिक विकलांगता है, तो उसे बहुविकलांगता कहा जाता है।"

## Mental Retardation
मंदबुद्धि बालक

Q What are causes and Problems of mental retardation and what are the method of mental retardation.

बौद्धिक असमर्थ अक्षमता के क्या कारण है ? एवं समस्याएँ क्या है ? मानसिक बाधित बालकों के शिक्षण विधि में क्या-क्या प्रयोग करना चाहिए?

Ans Definition of mental retardation

PWD (1995) Act के अनुसार,

"मानसिक मंदता का अर्थ किसी व्यक्ति के मस्तिष्क का अधूरा या अवरुद्ध विकास की दशा से है। ये विशिष्ट रूप से असामान्य बुद्धि का लक्षण है।"

समाज में लगभग 3% बालक मंदता के शिकार होते है व्यक्तिगत विभिन्नताओं ने बुद्धिलब्धि के आधार पर यह घोषित किया है, कि विशिष्ट बालकों में भी एक प्रकार मंदता बालकों की है, जो प्रतिभाशाली बालक सामान्य बच्चों से पृथक होते है। इसकी मानसिक योग्यता औसत से कम होती है। उनकी बुद्धिलब्धि साधारण बालकों से कम होती है।

Meaning of mental retardation :-

बौद्धिक अक्षमता का अर्थ, जिनकी बुद्धि स्तर कम होती है, जिनकी मानसिक कार्य सही ढंग से सामान्य नहीं हो पाती है।

NTA Act 1999 के अनुसार,

"यह एक ऐसी अवस्था है, जिसमें व्यक्ति का मस्तिष्क बाधित एवं विकास अपूर्ण होता है जिससे परिणाम बौद्धिक स्तर सामान्य से कम हो, उसे मानसिक मंदता कहते हैं।"

क्रो एंड क्रो के अनुसार,

"जिन बालकों की I.Q level 70 से कम होती है"

परमस्तिष्कीय पक्षाघात (cerebral Palsy)

cerebral → do with brain    Palsy → weakness

Types of cerebral Palsy :-

(1) spastic cerebral Palsy
(2) Dyskinetic cerebral Palsy
(3) Ataxic cerebral Palsy
(4) Mixed cerebral Palsy.

Symptoms of spastic cerebral Palsy :-

इसमें किसी अंग में लकवा की स्थिति हो जाती है। शरीर में ऐंठन होता है। यह शरीर के विभिन्न अंगो को प्रभावित करती है। इसमें व्यक्ति की चलने की क्रिया प्रभावित हो जाती है। इसके अन्तर्गत 3 Palsy (कमजोरियाँ) आती है।

spastic cerebral Palsy :-

इसके 3 types —

(i) spastic hemiplegia :-

इसमें हाथ पैर में Palsy कमजोरी होती है। इससे ग्रसित बच्चे कोई चीज सीखने या बोलने में बहुत समय लगा देते है।

(ii) spastic diplegia :-

यह अधिकतर पैरों में होता है। इसमें पैर के मांसपेशियों में ऐंठन होता है।

(iii) Spastic quadriplegia :-

इसके कारण त्वचा कान नाक अंगुलियों को प्रभावित हो सकती है।

2. Dyskinetic cerebral Palsy :-

इससे बाधित बच्चे झटपटाने जैसी अनैच्छिक क्रियाएं करते हैं। यह समस्याएं हाथ-पैर सिर में अधिक होती हैं। इनमें कोई नियंत्रण नहीं होती है। Body movement या तो बहुत तेज या बहुत धीमी होती है। कभी-कभी इसका असर चेहरे या जीभ पर पड़ता है, जिसके कारण बोलने में या निगलने में दिक्कत हो सकती है।

3. Ataxic cerebral Palsy :-

इनकी मांसपेशियों हाथ पैर आदि में कंपन होता है। तथा शरीर का संतुलन सही से नहीं बन पाता है। चलते-चलते गिर जाते हैं। ये लोग सीखने में या लिखने में या कोई चीज पकड़ने में परेशानी होती है। असमर्थता होती है।

4. Mixed cerebral Palsy :-

जब किसी व्यक्ति को एक से अधिक cerebral Palsy के लक्षण हो तो, वह स्थिति Mixed cerebral Palsy कहलाती है।

Causes of cerebral Palsy :-

(i) जन्म के समय अगर कोई Problem आती है तो इसका असर Brain पर भी पड़ता है।

(ii) गर्भ के दौरान अगर कोई infection होता है तो इसके कारण भी समस्याएं आ सकती हैं
(iii) सर में चोट लगने के कारण भी यह समस्या (cerebral Palsy) हो सकती है।

## Symptoms of cerebral Palsy :-

(i) Lack of muscle Coordination
(ii) Abnormal walking Posture
(iii) speech difficulty
(iv) learning disabilities.
(v) swallowing Problem (निगलने में दिक्कत)

## Treatment of cerebral Palsy :-

(i) speech therapy
(ii) Physical therapy.
इसमें किसी चीज को पकड़ने की, चलने की catch करने की training दी जाती है।
(iii) Surgery therapy (शल्य चिकित्सा)
(iv) Medication (दवा द्वारा)

## बौद्धिक अक्षमता के कारण :-

⇒ बौद्धिक अक्षमता के कई कारण हो सकते हैं कुछ कारण आनुवांशिक हो सकते हैं तो कुछ पर्यावरणीय कारण हो सकते हैं, कुछ कारण बालक के जन्म के समय होने वाली दुर्घटना हो सकती है।
⇒ वंशानुक्रम (Genetics) से भी यह समस्या होती है। इसमें कुछ रोगों के लक्षण माता - पिता से मिलती है। या बच्चों में चली जाती है।
⇒ गर्भधारण करने की आयु कुछ अनुसंधानों से यह स्पष्ट होती है कि माता गर्भधारण करती है, तो उससे भी बौद्धिक अक्षमता हो सकती है। अनुसंधान से यह स्पष्ट है कि 20 - 30

वर्ष में गर्भधारण करने पर शिशु बौद्धिक रूप से स्वस्थ पैदा होता है, जबकि 40-50 वर्ष में पैदा होने वाले शिशुओं में 50 में से 1. बौद्धिक बाधित हो सकते हैं।

* **संक्रमण :-** जन्म के समय संक्रमण वायरस आदि भी मानसिक बाधिता के कारण होता है। खसरा आदि मानसिक मंदता के कारण हो सकते हैं।

**दोषपूर्ण वातावरण :-** परिवार का दोषपूर्ण वातावरण भी मंदता का कारण बन जाता है। माता-पिता, भाई बहन का व्यवहार, प्रकृति, अनुशासन के कारण भी अक्षमता आ जाती है।

---

14/02/22

NOTE **Leprosy कैसे फैलता है?**

Ans- Droplet Infection.

⇒ India में Leprosy से 60% लोग ग्रस्त है।

⇒ Leprosy mycobacterium Leprea नामक बैक्टिरिया से फैलता है।

⇒ ये तुरन्त होनेवाली बिमारी नहीं है। यह धीरे-धीरे हमारे शरीर को affect प्रभावित करता है।

⇒ W.H.O (World health organisation) ने इसका नामकिरण किया है। WHO की स्थापना - 22 July, 1947

⇒ इसमें बैक्टिरिया skin के अन्दर होता है।

Leprosy → Multibacillary इसमें बैक्टिरिया
Leprosy → Paucibacillary → skin के ऊपर होता है

Community based education

शिक्षा को साधन के रूप में समुदाय को महत्वपूर्ण भूमिका निभानी होती होती है। बालक वहां समुदाय में बढ़ना, विकसित होना और रहना सीखा है। यह अपने समुदाय की अपेक्षाओं को संचित रखने और उनको उपयोग में लाने की शिक्षा को विकसित और प्रोत्साहित करता है। प्रत्येक समुदाय अपने स्वरूप विशेष रूप से बच्चों, किशोरों और व्यस्कों को उद्देश्यपूर्ण और प्रस्तावपूर्ण शिक्षा प्रदान करके अपनी प्रगति या विकास नियोजित करने का प्रयास करता है। समुदाय अपनी सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक आवश्यकताओं एवं आकांक्षाओं के अनुसार शिक्षा को ढालने का प्रयास करता है। 20/0

समुदाय दो लैटिन शब्दों से मिलकर बना है - Com + Munis | Cum का अर्थ - एकसाथ और Munis का अर्थ - सेवा करना होता है। (एकसाथ मिलकर एक-दूसरे की सेवा करना) समुदाय शिक्षा प्रदान करने का अनौपचारिक व सक्रिय साधन है। समुदाय में नई पीढ़ी को शिक्षित करने के लिए साधनों का विकास किया है। इस प्रकार समुदाय प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार से शिक्षा प्रदान करता है।

बालक अपनी संस्कृति, सभ्यता, बड़ो का सम्मान, अनुकरण आदि समाज से ही सीखता है। समाज से ही बालकों में

19/02/2022

सामाजिक, सांस्कृतिक, नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों का विकास होता है। शिक्षा के वास्तविक उद्देश्यों को पूरा करने में समाज की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। समुदाय अपने विभिन्न संसाधनों द्वारा विद्यालय में समावेशी शिक्षा प्रदान करता है। एवं स्वस्थ वातावरण का निर्माण करता है। समावेशी शिक्षा के कार्यक्रमों को सफल बनाने के लिए समुदाय की निम्नलिखित आवश्यकता है -

20/02/22

20-02-2022 C10 Unit-2 (d) Fatima Mo'am

Community based education की निम्नलिखित आवश्यकताएं हैं:

(i) शिक्षा के लिए आर्थिक सहायता प्रदान करना
(ii) समुदाय की समावेशी शिक्षा के लिए सहायता देना
(iii) समावेशी शिक्षा के लिए शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों की व्यवस्था करना।
(iv) समावेशी शिक्षा हेतु समाजसेवी संस्था द्वारा कार्यक्रम
(v) असमर्थी बालकों की पहचान
(vi) " " की चिकित्सा
(vii) असमर्थी बालकों के लिए व्यावसायिक प्रशिक्षण और रोजगार की व्यवस्था।
(viii) समावेशी शिक्षा में चल रही शैक्षिक क्रियाओं में योगदान
(ix) अनौपचारिक साधनों की व्यवस्था करना।

समुदाय विद्यार्थियों के लिए ऐसी प्रयोगशाला है, जहाँ वह विद्यालय में सीखे हुए ज्ञान एवं कौशलों का प्रयोग करता है।

जॉन डीवी ने विद्यालय व समुदाय के संबंध में, कहा —

26/07/22

C10 (unit - )

Fatima Mam

विद्यालय एक सामाजिक संस्था है। समाज या समुदाय स्वयं को जीवित रखने के लिए विभिन्न प्रकार की शिक्षण संस्थानों की स्थापना करता है। शिक्षा का समुदाय के जीवन एवं उसकी प्रगति पर बहुत प्रभाव पड़ता है। शिक्षा समुदाय को प्रगति की ओर ले जाता है। विद्यालय के वातावरण में समुदाय की सेवा करने की बात छुपी होनी चाहिए। समुदाय शिक्षा पर पूँजी व्यय होता है। परन्तु इसके बदले में शिक्षा संस्थाओं से भी अपेक्षा करता है कि वो अपना कार्यक्रम समुदाय की सेवा के लिए आयोजित करें।

विद्यालय समुदाय के ऐतिहासिक, धार्मिक, वैज्ञानिक तथा भौगोलिक स्थलों पर विद्यार्थियों का शैक्षिक भ्रमण पर ले जाने का प्रबंध करें। इससे बच्चों को समुदाय के विषय में ज्ञान होगी भी समाज हमारी शिक्षा के लिए तथा सुविधा प्रदान कर रहा है।

⇒ सामुदायिक सर्वेक्षण द्वारा समुदाय के विभिन्न समस्याओं का अध्ययन कर अनेक उपाय किये जा सकते हैं।

⇒ समुदाय विद्यालय को अच्छा वातावरण प्रदान करके बच्चों के विकास में सहायता प्रदान कर सकता है। अभिभावकों का यह कर्तव्य है कि बच्चों को विद्यालय

## समावेशी शिक्षा में मानव संसाधन

मानव संसाधन का मुख्य उद्देश्य है कि बच्चों का सर्वांगीण विकास करना है, ताकि वह संगठन (समाज तथा राष्ट्र) के लिए बेहतर योगदान दे सके। जिससे मनुष्य में परिवर्तन आता है, जिससे वो वर्तमान और भविष्य के लिए एक स्थान (मुकाम) बना सके। और यह Human Resource की है जो उनको वर्तमान और भविष्य के लिए उपलब्ध कराती है। यह सारी सुविधाएं उपलब्ध कराती है फिर भी बच्चो दिव्यांग है केवल उनकी कुशलता के लिए ही नहीं बल्कि उनके विकास का मूल्यांकन करता है प्रशिक्षण भी देता है और रोजगार की भी सोचता है। हम देखेंगे कि समावेशी शिक्षा यानि Disability के क्षेत्र में मानव की क्या आवश्यकता है?

5/03/22

C10 (Unit- )

Fatima Mam

⇒ RTE के तहत शिक्षा सभी के लिए सभी का अधिकार है शिक्षा सभी को प्राप्त करना चाहिए चाहे वह दिव्यांग हो या सामान्य व्यक्ति हो। सभी को शिक्षा मिलनी चाहिए। और सभी को शिक्षा मिल भी रही है अलग-अलग नियम के तहत। समावेशी शिक्षा में सभी बच्चों के According अधिगम कराया जाता है विभिन्न प्रकार के गतिविधियों, क्रियाकलापों के आधार पर अधिगम को सरल बनाते हैं जिससे कि विशिष्ट व सामान्य बालकों की अधिगम समस्याओं का समाधान हो सके। जैसे- दृष्टिबाधिता, बहुबाधिता, श्रवणबाधिता, पर-मस्तिष्कीय पक्षाघात आदि लोगों में अलग-अलग तरह के Equipment की जरूरत होगी। लेकिन मानव संसाधन उस level

Level पर नहीं है जहाँ उनके लिए एक बेहतर तरीके से पुर्नवास कर सके। इसके अनुसार विकलांग आज भी दिव्यांग बालक को सामान्य बालक की तरह शिक्षा बनाना संभव नहीं लग रहा है। हम चाहते हैं कि जो भी disable व्यक्ति है वह भी शिक्षा ले, राष्ट्र के और समाज के विकास में अपना योगदान दे सके। [ RCI, 1992 ]

दिनांक:

स्थान: (भारतीय पुर्नवास परिषद Rehabilitation Council of India)

भारतीय पुर्नवास परिषद के द्वारा ~~16~~ इसके 16 categories को Certificate से लेकर Master और P.hd तक के कार्यक्रम उनके द्वारा संचालित किये जाते हैं।